रतनचन्द जैन मुख्तार व्यक्तित्व और कृतित्व (फोल्डर नं. ०१२००९)

मुख्य टाइटल
आशीर्वचन
समर्पण
अभिमत ---------- ८
आद्य व्यक्तव्य ---------- १४
आद्य व्यक्तव्य ---------- २०
अनुक्रम ---------- २७
व्यक्तित्व एवं छाया छवियाँ
पं. रतनचन्द जैन मुख्तार-जीवनक्रम ---------- १-१२
पं. जीकी विविध छाया छवियाँ ---------- १ से ८
आशीर्वचन, मंगलकामना, श्रद्धाञ्जलि और संस्मरण
सिद्धान्तज्ञागुणी स्व. रतचन्द्र ---------- १३
मंगल भावना ---------- १३
अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी ---------- १४
अन्तर्ध्वनि ---------- १६
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ---------- १७
पण्डितरत्न ---------- १७
महोपकारी मुख्तारजी ---------- १८
समतायुक्त विद्वत्ता ---------- १९
मंगल कामना ---------- २१
जिनवाणी की चिरस्मरणीय सेवा ---------- २१
सरस्वती के उपासक-बाबूजी ---------- २२
स्वाध्याय ही परम तप है ---------- २३
स्याद्वाद शासन के समर्थ प्रहरी ---------- २३
मूक विद्याव्यासंगी ---------- २३
लघुकाय और अगाधज्ञान ---------- २४
प्रेरणास्पद व्यक्तित्व ---------- २५
मुख्तारजी की जैन शासन सेवा ---------- २५
साधानारत महाविद्वान् ---------- २७
यथार्थ आत्मार्थी ---------- २८
आगममार्गदर्शक रतन ---------- २९
हम पर आपके अपार उपकार हैं ---------- ३०
प्रतिभा के प्यारे सपूत ---------- ३१

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

अद्वितीय महापुरुष ---------- ३१
परम श्रद्धेय ---------- ३३
सरस्वती उपासक-श्रुतानुरागी महात्मा ---------- ३३
एक आदरणीय सत्पुरुष ---------- ३४
स्मरणशक्ति के धनी ---------- ३५
आगमज्ञानी अटूट श्रद्धानी ---------- ३५
श्रद्धा सुमन ---------- ३६
सिद्धांतशास्त्रों के विशिष्ट ज्ञाता मुख्तारश्री ---------- ३६
विशिष्ट विद्वान् ---------- ३७
सिद्धान्त सूर्य ---------- ३७
अद्वितीय प्रश्नसह ---------- ३८
मोक्षमार्ग के पथिक ---------- ३८
अध्यवसायी विद्वान् ---------- ४१
ज्ञान और चारित्र के धनी ---------- ४१
विनयांजलि ---------- ४२
विशिष्ट मेधावी प्रज्ञातिशायी मुख्तार साहब ---------- ४३
तपस्वी साधक ---------- ४४
सिद्धान्त ग्रंथों के पारगामी विद्वान् ---------- ४५
जैनागमों का सचेतन पुस्तकालय ---------- ४६
आदर्श जीवन ---------- ४७
श्रद्धाञ्जलि ---------- ४९
अनुभवी विद्वान् ---------- ५०
सरस्वती के वरद पुत्र ---------- ५०
सेवाभावी, विनयशील मुख्तार सा. ---------- ५१
पूज्य गुरुवर्य रतनचन्द्र मुख्तार ---------- ५२
तत्त्वज्ञानी पण्डितजी ---------- ५३
निरभिमान व्यक्तित्व ---------- ५३
ज्ञान और चारित्र का मणिकांचन योग ---------- ५४
जीवनदानी श्रुतसेवी ---------- ५४
महान् आत्मा मुख्तार सा ---------- ५६
स्मृति के दर्पणमें ---------- ५८
बाबूजी-इस शताब्दी के टोडरमल ---------- ६२
अद्वितीय विद्वान् ---------- ६४
रतचन्द्र मुख्तार, सहारनपुर वाले ---------- ६४
शीलवान गुणवान आप थे ---------- ६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सफल स्वाध्यायी --- ६७
अपूरणीय क्षति --- ६७
सरल परिणामी --- ६८
विनम्रता की सजीव मूर्ति --- ६८
निस्पृह आत्मार्थी -- ७०
विद्वानों की दृष्टि में-स्व. पं. रतनचन्द मुख्तार --- ७१
पूज्य श्री नेमिचन्द मुख्तार --- ७५
कृतित्व-शंका समाधान
(क) प्रथमानुयोग --- ७६-९९
अनन्तवीर्य मुनि का केवलज्ञान के बाद ५०० धनुष ऊर्ध्वगमन ---------------------------- ७६
अनादि जैनधर्म के कथंचित् प्रवर्तक --- ७६
अनुबद्ध केवलियों के नाम व संख्या --- ७८
आदिनाथ बाहुबली आदि कर्मभूमिया थे --- ७९
आदिनाथ के सहस्रवर्ष तक शुभ भाव रहे थे -- ७९
युगादि में इंद्र द्वारा नवी जिन मन्दिर स्थापन -- ८०
इमली के पत्तों प्रमाण अवशिष्ट भव वाले मुनि कैसे थे ----------------------------------- ८०
कृष्ण ने कौसी पर्याय में सम्यक्त्व प्राप्त किया --- ८०
कृष्ण अब सोलहवें तीर्थंकर होंगे --- ८१
वीर निर्वाण के पश्चात् गौतम आदि ८ केवली हुए --- ८१
भगवान महावीर के बाद के केवलियों की संख्या -- ८२
जीवन्धर, महावीर के पश्चात् मोक्ष गये -- ८३
तीर्थंकरों के लिए स्वर्ग से भोजन -- ८३
तीर्थंकरों का शरीर जन्म से ही परमौदारिक कहा जा सकता ह ---------------------------- ८४
तीर्थंकरों के जन्म से पूर्व रत्नवृष्टि का कारण एवं रतच्नों का स्वामी कौन ------------------ ८६
तीर्थंकर प्रतिमाओं के चिह्न कैसे नियत होते हैं -- ८७
किसी भी तीरथंकर की आयु पूर्वकोटि नहीं हुई -- ८७
नाभिराय और मरुदेवी जुगलिया नहीं थे --- ८७
नारद चरमशरीरी नहीं होते -- ८८
नारद के आहार, आचरण, गति आदि का वर्णन --- ८८
नारायण व प्रतिनारायण के भी अनेक शरीर -- ८९
जिनके शरीर नहीं होता, उनके पसीना आदि भई नहीं होते ------------------------------- ८९
नेमिनाथ के विहार के साथ-साथ लौकान्तिक देवों का गमन ----------------------------- ८९
पुराणों में उल्लिखित कामविषयक वर्णन भी अश्लीलता की कोटि में नहीं -------------------- ८९
बाहुबली निःशल्य थे --- ९०
केवलज्ञान होते ही बाहुबली का उपसर्ग दूर -- ९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवलज्ञान होने पर छिन्न भिन्न अंगोपांग भी पूर्ववत् पूर्ण हो जाते हैं---------------------९०
भद्रबाहु आचार्य श्रुतकेवली थे । गणधर भी सकलश्रुतज्ञ होते हैं---------------------------- ९१
भरत ने चक्र नहीं चलाया यह कथन मिथ्या है ---९२
भरत व कैकेयी को परम व निर्मल समयक्त्व क हुआ -------------------------------------९३
भरतचक्रवर्ती के दीक्षागुरु का उल्लेख आगम में नहीं मिलता ------------------------------९३
बलदेव ने बिना गुरु के स्वयं दीक्षा ग्रहण कर ली--९३
मारीचि को उसी भव में सम्यक्त्व हुआ था या नहीं ---------------------------------------९४
मरुदेवी का जन्म क्षेत्र --९४
मरुदेवी आदि रजस्वला नहीं होती थी --९५
पाँखुड़ी लेकर भगवान के दर्शनार्थ जाने वाला मंढ़क समकिती था या नहीं -----------------९५
रुद्र उत्सर्पिणी काल में भी होते हैं--९५
विदेह में धनरथ तीर्थंकर ---९५
शलाकापुरुष ६३ न होकर ५८ ही कैसे हुए --९६
श्रेणिक का अकाल-मरण नहीं हुआ --९६
श्रेणिक सम्यक्त्व सहित नरक में गये--९६
सगर के आठ हजार पुत्र मरे या मूर्च्छित हुए ---९७
समन्तभद्राचार्य की भावी गति --९७
सीता का जीव प्रतीन्द्र सम्बोधन हेतु नरक में नहीं गया -----------------------------------९८
त्रिलोक मण्डन हाथी का क्रिया कलाप एवं मोक्षमार्ग में प्रवेश -----------------------------९९
(ख) करणानुयोग -- १००-६१९
गुणस्थान चर्चा --१००
समवसरण-- १८७
जीवसमास ---१९२
पर्याप्ति --१९४
प्राण -- २०३
संज्ञा ---२०६
मार्गणा--२०६
गतिमार्गणा--२०६
इन्द्रिय मार्गणा --२१८
काय मार्गणा -- २३३
योग मार्गणा---२४७
वेद मार्गणा--२६९
कषाय मार्गणा---२७२
ज्ञान मार्गणा --२७३
संयम मार्गणा ---३०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दर्शन मार्गणा ---------- ३११
लेश्या मार्गणा ---------- ३१५
भव्य मार्गणा ---------- ३२६
सम्यक्त्व मार्गणा ---------- ३३१
उपशम ---------- ३३१
क्षयोपशम-वेदकसम्यक्त्व ---------- ३४९
क्षायिक सम्यक्त्व ---------- ३५९
सम्यक्त्व विविध ---------- ३६९
संज्ञी मार्गणा ---------- ४०२
आहार मार्गणा ---------- ४०५
बन्ध ---------- ४०९
उदय ---------- ४४४
सत्त्व ---------- ४९२
गुणश्रेणी, स्थिति अनु. काण्डक ---------- ५०३
अनुभाग ---------- ५०५
अविभाग प्रतिच्छेद ---------- ५०८
करण ---------- ५१३
भाव ---------- ५२२
पुद्गल वर्गणा ---------- ५२९
शरीर ---------- ५३५
समुद्घात ---------- ५४२
अकालमरण कदलीघात ---------- ५५२
कुल, योनि, जन्म ---------- ५७९
गत्याति ---------- ५८२
लोक रचना ---------- ६०३
काल ---------- ६१२
श्रेणी, मान ---------- ६१६
(ग) चरणानुयोग ---------- ६२०-८७२
चारित्र सामान्य ---------- ६२०
अष्ट मूलगुण ---------- ६३५
सप्त व्यसन ---------- ६४०
भक्ष्याभक्ष्य ---------- ६४६
दान ---------- ६५१
अभिषेक-पूजा-भक्ति ---------- ६५८
अव्रती की क्रियाएँ ---------- ६८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देशव्रत --- ७०४
ध्यान --- ७२०
अनगार चारित्र---७५५
स्वरूपाचरणचारित्र --- ८२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org